ISSN: 2395-7476
IJHS 2017; 3(1): 88-92
© 2017 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 17-11-2016
Accepted: 18-12-2016

आरती शुक्ला
शोधार्थी, बनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान भारत

डॉ. मीनाक्षी गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर, बनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान भारत

Correspondence
आरती शुक्ला
शोधार्थी, बनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान भारत

चैतन्य सम्प्रदायः देवविग्रहों का रूप श्रृंगार

आरती शुक्ला, डॉ. मीनाक्षी गुप्ता

वर्तमान में वस्त्र एवं परिधान पढ़ने वाले छात्र विषय के अंतर्गत परिधानों व अतिरिक्त साज सज्जा की वस्तुओं से सम्बंधित फैशन, प्रचलन एव उनकी भविष्य में उनकी प्रवत्ति क्या रहेगी उसका अध्ययन करते हैं। जिससे बाजार एवं सहित्य में फैशन से सम्बंधित वस्त्र व परिधानों का प्रवाह व जानकारी देखने को मिलती हैं। इसी प्रकार देवालयों में देव विग्रहों के श्रृंगार में प्रयुक्त भारतीय परम्परागत वस्त्र, परिधान एवं इनकी शैली की जानकारी कवि, आचार्यों व गुरुओं द्वारा लिखे गए पद, श्लोक, टीका व साहित्य के द्वारा मिलती हैं। वृन्दावन में चैतन्य सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव १६ वीं शताब्दी के आस पास माना जाता है। इस काल में चैतन्य महाप्रभु के द्वारा समाज में भक्ति की विशेष धारा प्रचलित की थी। जिससे वृन्दावन में अनेक प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार व निर्माण हुआ। मंदिरों में प्रतिष्ठित श्री विग्रहों की सेवा की जाने लगी। इन सेवा के अंतर्गत श्रृंगार (वस्त्राभूषण), भोग (पाक कला) एवं राग (संगीत व कीर्तन) से सम्बंधित है।

मंदिरों में श्रीविग्रहों का श्रृंगार –

मंदिरों में श्री विग्रहों का श्रृंगार में प्रयुक्त वस्त्र, उनके रंग, आभूषण एवं विशेष वस्तुओं का प्रयोग अष्टयाम, दिवस, ऋतु व उत्सवोंनुसार होता है।

ब्रज के प्रधान भक्ति सम्प्रदायों में सेवा विधि में श्रृंगार, भोग व राग को प्रमुखता दी गयी है। राग गान–वाद्य के प्रसंग में व भोग पाक कला के सन्दर्भ में है। श्रृंगार ठाकुर जी एवं स्वामिनी जी के वस्त्र–परिधान, उनके आभूषण, उत्सवों की सजावट और मंदिरों की साज–सज्जा उल्लेखनीय है।

परिधान – ब्रज के भक्ति सम्प्रदायों में ठाकुर जी को महाराजाओं एवं बादशाहों की भांति सजाने की परम्परा रही है। फलतः जहाँ उनके वस्त्रों को अत्यधिक संख्या में प्रस्तुत करने के साथ–साथ देशी–विदेशी कपड़ों का समन्वय देखा गया है। ये वस्त्र, सूती, रेशमी एवं ऊनी होते थे जिन्हें ऋतुओं के क्रम और झांकियों एवं उत्सवों की भावना के अनुसार धारण कराते थे।

वल्लभी सम्प्रदाय में श्रृंगार विधि के अनुसार ठाकुर जी के श्री मस्तक के आठ प्रमुख वस्त्रों से अलंकरण निश्चित किये गए हैं – मुकुट, सेहरा, टिपारा, कुलहा, पाग, दुमाला ,फेंटा एवं पगा (ग्वाल पगा) इसके अतिरिक्त कलंगी, तुर्रा, कतरा, चीरा, लूम, टोपी व खोई भी है। कटि के ऊपर अंगरखी, बाघा, जामा, काछन, झगुली, एकलाई एवं पटका है। अधो अंगो पर जांघिया, तनिया धोती, पीताम्बर, परदनी, आड़बंद, मल्लकाछ, सूथन एवं मोजा है।

आभूषण – यह स्वर्ण निर्मित एवं रत्न जटित होते थे। श्री मस्तक पर मोर मुकुट, किरीट मुकुट एवं सेहरा व कानों में कुण्डल (मीन, मयूर, मकर एवं शुक की आकृतियों के) तथा तांतक, नासिका के बेसर एवं बुलाक, कंठ के कंठ श्री, कठुला, पदन, बघनखा चौकी, माला तथा हार, श्रीहस्त (हाथ) बाजूबंद कड़े एवं मुद्रिका या कटि के कटिपेंच, छुद्र घंटिका (कटि किंकिणी), करधनी, मेखला और श्री चरणों के पैंजनी, पायल नूपुर व नखाभूषण प्रमुख हैं।

चैतन्य सम्प्रदाय के प्रमुख कवियों एवं भक्तों द्वारा ठाकुर जी के वस्त्राभूषणों का वर्णन किया है। मनोहर दास जी ने ग्रीष्म ऋतु के ठाकुर जी के वस्त्राभूषण का वर्णन किया है–

इंद्र नीलमणि श्याम सुन्दर निदाघरित, थोरे थोरे भूषण मुकता माल पहरै।
झीनी धोती सेत पै किनारी लाल उपरेना, पीरे मोहिं अंग अंग झलकनि लहरै।।
तिलक बनाइ भाल बाहु वक्ष कक्ष खौर, केसरि पगिया मोर चंदा ब्यार फहरै।
राधिकारमण प्रिया मिल बैठ तहखानें, मनोहर नैन शोभा सिन्धु पैठे गहरै।।

उज्जवल नीलमणि में वर्णित ठाकुर जी का श्रृंगार –

नवल श्रृंगार निरखि राधा के लैदयनि प्रिया रमण दिखावै।
बलि धरि श्री रंगीली छवि की कहत न बनै देखन ही आवै।।

यहां राधाश्यामसुंदर एवं राधारमण मंदिर के श्री विग्रह के वस्त्राभूषणों का चित्रांकन दिया हैं–

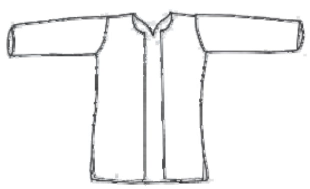	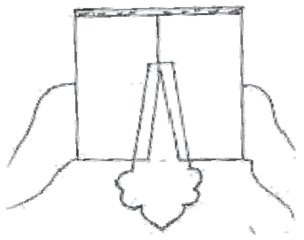	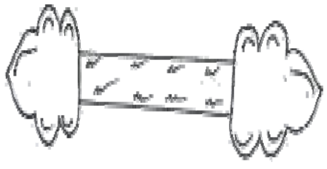
बगलबंदी	पजामा एवं लांग	पटका

		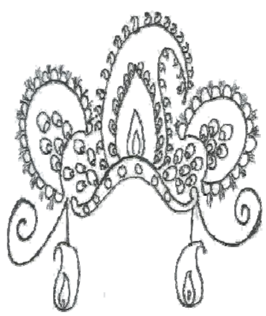	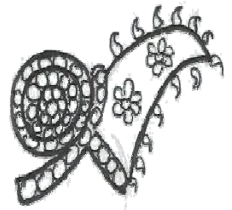
बाखचूडा	मुकुट	मुकुट	ग्वाल पाग
	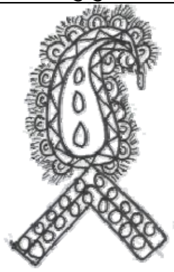		
मुकुट	मुकुट	हार	नक बेसर
	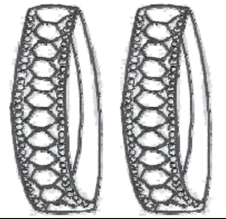	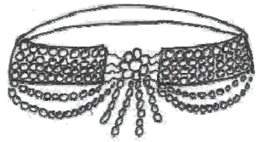	
अंगुठी	कंगन	कमर बंध	बांसुरी

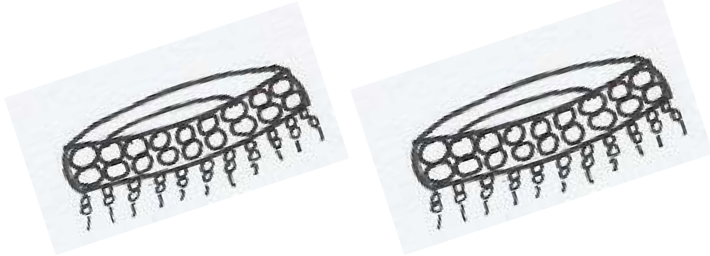

नूपुर

ललिता किशोरी कृत 'रस कलिका' में नख शिख सौन्दर्य सम्बन्धी पद इस प्रकार हैं–

निरखौ वर श्याम सुन्दर अनुपम सुघराई।
नीलक मनि निकर सहस श्यामला सुहाई।।
अलकै अलवेली भाल लटकि मुकुट राजै।
निकट निकट भृकुटी विकट पेंच पाग छाजै।।
श्रवन कुण्डल झलक मलक कपुलन लौं हलकैं।
मानहुं ससि वृंद विंव जमुना में झलकैं।।
भृकुटि धनुष निमख वान अंखियां की पांती।
मधुर मधुर अधर अरून विंवाफल भांती।।

राधा रानी की पोशाक – इनके प्रमुख परिधान धोती, साड़ी, ओढ़नी, चोली, अंगिया, अंतरौटा एवं घाघरा हैं।

गदाधर भट्ट द्वारा परिधानों का वर्णन –

कटि केहरि पहिरे पट झीनों पटुका बांधि अमेण।
चन्दन चरचि ओढ़ि उपरैना दरसत सरस अंगेठ।।

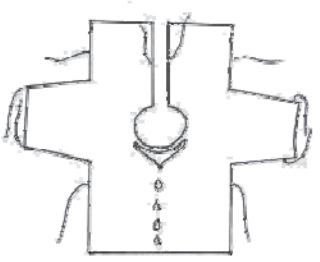	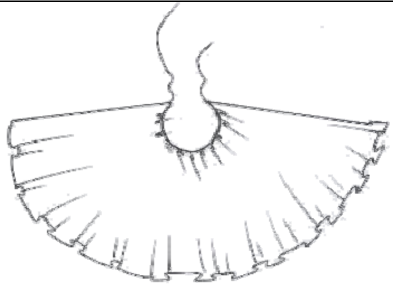	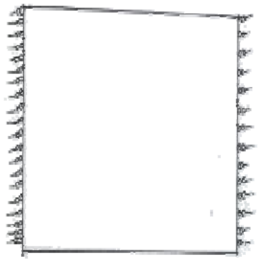
चोलका	लंहगा	चुनरी

वल्लभ रसिक जी कृत सांझी पद में भी वस्त्रों का उल्लेख है –

उरजन पर जनु परत लखी कंचुकी पर बंद सुदेस।
पक्षी किशोर वे हैं उड़े सपक्ष गिर परे विपक्ष शिशु देस।
अतलस लहँगा हेम खत लसत लिखे मत लसत है प्रेम।।

श्रील रूप गोस्वामी प्रणीत श्री श्री राधा कृष्ण गणोद्देश्य– दीपिका में राधारानी के वस्त्रों का उल्लेख है–

वासो मेघम्बारं नाम कुरू विन्दनिभं तथा।
आद्यां स्वप्रियम भ्राभं स्क्तमन्त्यं हरेरू प्रियम्।।

कंचुली–

षड्वर्ण पुष्प विन्यास–सौष्ठवेनाति चित्रिता।
कस्तूरी वासिता कंठलम्बि गुच्छात्र कंचुली।।

मनोहर दास जी ने ग्रीष्म ऋतु के राधारानी के वस्त्राभूषण का वर्णन किया है–

तनसुख सारी में किनारी जगमग जोति, अतरौटा अतलस नील पीत धारी हैं।
सोंधें सजी आंगी मिहीं हरी कोर कसि बाँधी, राधिका रमण मन गज बंध बारी हैं।।
चोटी बेंना आड़ नासा मोती औ चिबुक बेंदी, अंजन विशाल नैन त्यौं कटाच्छ कारी हैं।
तप रितु थोरे थोरे भूषन पहरि प्यारी, जल जंत्र मेह मनोहर चहचारी हैं।।

आभूषण – राधाजी के शीश से लेकर चरण तक के आभूषण के नाम इस प्रकार हैं–
चन्द्रिका, शीशफूल, बेंना, बंदी, तिलक, लर, अलकावली, चोटी, पानड़ी, झूमर, बारी, झेला, कर्णफूल, तरकी, झूमका, पत्ता, चोकड़ा, बेसर, बुलाक, सींक, फूल, मोगली, नथ, हंसली, हमेल, तिमनिया, दुलड़ी, मुक्तामाला, नौसरहार, चंपाकली, बरा, बांकड़ा, जोसन, बाजूबंद, कड़े, छड़े, कंकण, हथफूल, पोंहची, छन्न, पहेली, रतन चौक, सांकड़ा, मुद्रिका , करधनी, पेंजनी, पायल, लच्छे, झाँझन, जेहर, नूपुर, छल्ला, अनवट व बिछुआ हैं।
श्रील रूप गोस्वामी प्रणीत श्री श्री राधा कृष्ण गणोद्देश्य– दीपिका में राधा रानी के फूलों के आभूषण का नाम व वर्णन किया हैं।

मुकुट (किरीटम्)–

रंगणी–हेमयूथी भिनर्व माली–सुमलिभिः। धृति–माणिक्य गोमेद मुक्तेंदु मणिकान्तिभिः। विन्यस्ताभिर्यथा शोभमाभिः सुष्ठु विनिर्मितम्।।	

चोटी में धारण की जाने वाली फूलों की लड़ी (बाल पाश्या)–

केशबन्धन डोरी च विचित्रैः कोरकादिभिः। आवलि गुम्फिता गाढं बालपाश्येति कीर्त्तिता।।	

कर्ण–भूषण (कर्णपूरः) –

ताटकं कुण्डलं पुष्पी कर्णिका कर्ण वेष्टनम्। इति पञ्चविधः प्रोक्तः कर्णपूरोऽत्र शिल्पिभः।।	

कान के भूषण को ५ भागों में विभाजित किया है – ताटकं, कुण्डल, पुष्पी, कर्णिका, कर्ण वेष्टन कुण्डल ही मयूर, मगरमच्छ, कमल व अर्द्ध चन्द्राकार के समान दिखायी देते हैं।

मयूरभकराम्भोज–शशांकार्द्धदिसन्निभम्।
स्वानुरुपैः कृतं पुष्पैः कुण्डले बहुधोतिदम्।।

मांग टीका (ललाटिका)–

द्विवर्ण पुष्परचिता द्विपार्श्वा शोणमध्यमा।
अलकावलिमूलस्था पुष्पाटी ललाटिका।।

कंठ भूषण (ग्रैवेयकम्) –

कर्तुलाश्च चतुग्रीवा कौसुम्भ्यो यत्र कोष्ठिकाः।
तद्वर्ण पुष्पकैर्मध्यं ज्ञेयं ग्रैवेयकस्तु तत्।।

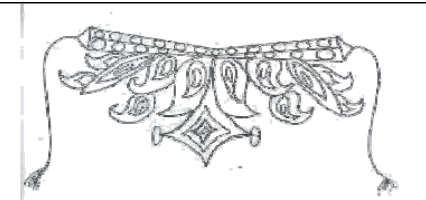

बाजूबंद (अंगदम्)

क्लृप्तपुष्पलतातन्तु–प्रोतैर्मण्डलतां गतैः।
त्रिवर्णौपर्युपर्युप्तत्रिपुष्पा न न मंगदम्।।

कंगन (मणि बन्धनी) –

चतुर्वर्ण प्रसुनांग गुच्छलिम्बत्रि धारिका।
करडोरी कुसुमजा किर्त्तितामणिबन्धनी।।

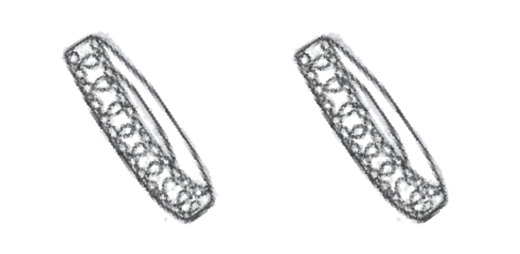

वल्लभ रसिक जी के सांझी पदों में –

बाजू में बाजूबंद रतन झवा झूलत मखतूल।
करे इहि बाजूकौं बाजूहि बंद शोभा जु चढ़ै न डीठ भूल।।

रतन मुद्रिकन मुद्रित किय नृप क्षुद्र करन दान गान।
निज कर निकरन सों जु करन कों दिय सुवरण कौ दान।।

कटि भूषण –

क्षुद्र झल्लारिसंवीता चित्रगुम्फ–करम्बिता।
पञ्चवर्णो विरचिता कुसुमै काञ्चि रुच्यते।।

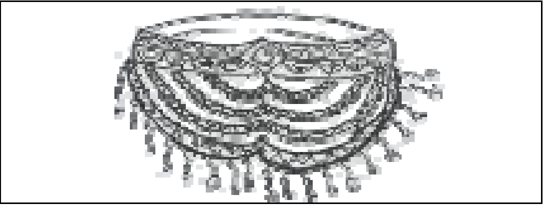

पायल / नूपुर (कटक) –

कुऽय–वृत्तैर्लतातन्तौ प्रोतैरकैक शस्तु यः।
कल्पितो विविधैः पुष्पैः कटका बहुधोदिताः।।

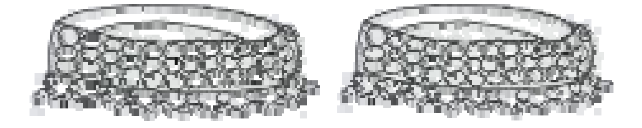

वल्लभ रसिक जी की वाणी में –

रतन चौक मधि लाल नोंक छबीरतन सोक की भांति।
हाथ लालन कियौ हाथ लालन की बद्धी के लालन की कांति।।

चरणाभूषण (हँसकः) –

पृथुला कग चतुः श्रृंगी पुष्प श्रृंट–लम्बिका।
पार्श्वे सौमनसा गुम्फाः स्फुरन्ति हंसको भवेत्।।

श्लोकों एवं पदों की रचना से ज्ञात होता है की मध्यकाल में लोक व्यवहार एवं जीवन में इस प्रकार आभूषणों एवं वस्त्रों का बहुआयात में प्रयोग होता था। इस समय के बाजार, शिल्पकार, स्वर्णकार, बुनकर उत्तम दर्जे के कलाकार थे। इतने सुन्दर बारीक एवं आकर्षक उत्पादों व वस्तुओं का निर्माण दक्षता से करते थे।
उज्जवल नीलमणि में वर्णित प्रियाजी का श्रृंगार –

नीली सारी कंचन तारी दामन लामन मन भर भावै।
शुभ नवरंगी कुच पचरंगी चोली चतुर मणि चित चुरावै।।
मोर चन्द्रिका विभुरी अलकावली लली दृग मृग नैनी धावै।
खंजन नैनन अंजन रंजन भाल तिलक बेंदी धवि पावै।।
बेसर लटकन नासा शुक चटकन करन फूलकी भावै।
उर नवहार श्याममणि नायक शुभ दायक नवरत्न भुजा में।।
हेम नीलमणि चूड़ी कंकन मुंदरी आरसी रूप झुकावै।
कटि किंकिण पग नूपुर मृदसुर महंदी जावक दुति सरसावै।।
जय जय धुनि सब कहत अनुचरी अति अनुराग भरा मिलि गावौ।
वीरी दै नागर अधरन में गुण मंजरी पुनि चामर दुरावै।।

उपरोक्त पदों में नीले रंग की साड़ी पर सोने के तारों से किये गए काम का वर्णन है जिससे साड़ी की आभा बढ़ गयी हैं। पांच रंगों की चोली, मोर रूपी चन्द्रिका, आँखों में काजल, माथे पर बिंदी, नाक में फूल की डिजाईन की बेसर, ह्दय पर नया नील मणि हार व भुजाओं पर नवरत्न का बाजूबंद, नीलमणि की चूड़िया, कंगन, अंगूठी, आरसी तथा कमर में कमरबंध, पैरों में पायल, मेंहदी धारण कर रखी है।
इस प्रकार हम चैतन्य सम्प्रदाय में श्री विग्रह को प्राण प्रतिष्ठित मान कर उनकी सेवा की जाती है। मंदिर संस्कृति में हम श्रृंगार की अदभुत परम्परा देखते हैं जो कि प्राचीन होने के साथ साथ कुछ नवीन बदलाव भी लिए हैं। जिनमें प्रयुक्त वस्तुएं व सामग्री में भी बदलाव के साथ साथ उनके नामों में भिन्नता लिए हुए हैं जिसको लेखन व चित्रांकन के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इस माध्यम से हम अपनी परम्परा के विभिन्न रूपों को सँवारने, सहेजने, संवर्धन व सरंक्षण करने में योगदान दे सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहिवासी देवकीशरण, मलमल जामदानी; परिशिष्ट।
2. अग्रवाल सी एम, अकबर एंड हिज ऑफिसर ; पृ. ८४।
3. उज्जवलनीलमणि ।
4. उषा गोयल, चैतन्य सम्प्रदाय का ब्रज भाषा काव्य; पृ. १६६।
5. द्विवेदी राधेश्याम, ब्रज विभव; पृ. ६२–६४।
6. मदन मोहन मंदिर का तोषाखाना का रिकॉर्ड।
7. मर्फी वेरोनिका एंड फ्रिल रोसेमेरी, टाई एंड डाई टेक्सटाइल ऑफ इंडिया; पृ. १५७।
8. मुजीब एम, दी इंडियन मुस्लिम; पृ. ३४।
9. वाटसन जे फोर्बेस, द टेक्सटाइल मैन्युफैक्चरर एंड द कोस्ट्युम ऑफ द पीपल ऑफ इंडिया; पृ. ८३।
10. शर्मा राजेश, लिखिया एक अज्ञात परम्परा की खोज; पृ. १२४।
11. श्यामदास, ८४ वैष्णवों की वार्ता; पृ. ३२–३३।
12. हबीब इरफान, एटलस ऑफ द मुगल एम्पायर; पृ. ३१।
13. हबीब इरफान, अकबर और तत्कालीन भारत; पृ. २९८–३००।
14. सिंह महेंद्र राजस्थान की पाग पगड़ियाँ पृ. ६–१३।
15. सिंह रामफल, हिन्दू मुस्लिम सांस्कृतिक एकता का इतिहास; पृ .३२२।
16. श्रील रूप गोस्वामी प्रणीत श्री श्री राधा कृष्ण गणोद्देश्य दीपिका।